National School of Drama
Repertory Company
presents

विजयदान देथा की कहानी "दुविधा" पर
आधारित संगीतमय प्रस्तुति
(कथा गायन वाचन शैली में)

माई री मैं का से कहूँ

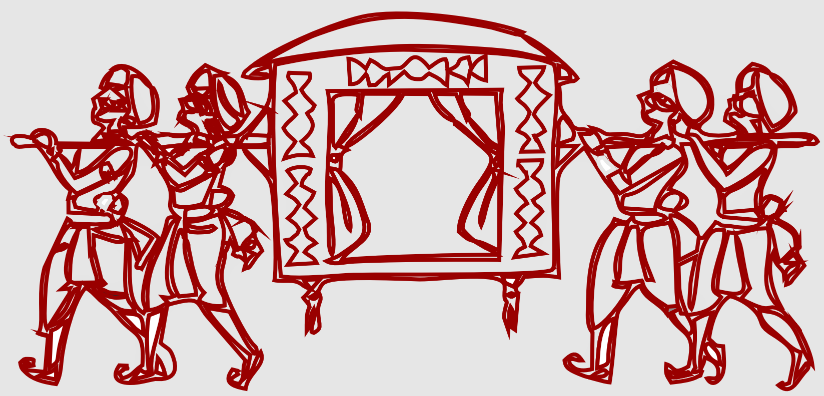

संगीत एवं निर्देशन
अजय कुमार

National School of Drama
Repertory Company
presents

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
Government of India

विजयदान देथा की कहानी "दुविधा" पर
आधारित संगीतमय प्रस्तुति
(कथा गायन वाचन शैली में)

माई री मैं का से कहूं

3,4 एवं 5 फरवरी 2023   सायं 6:30 बजे

अतिरिक्त प्रदर्शन : 4 एवं 5 फ़रवरी 2023   दोपहर 3:30 बजे

अतिरिक्त प्रदर्शन : 6 एवं 7 फ़रवरी 2023   सायं 6:30 बजे

टिकट : ₹ **100/-**

संगीत एवं निर्देशन
अजय कुमार

सम्मुख सभागार
बहावलपुर हाउस, भगवानदास रोड
मंडी हाउस, नई दिल्ली - 110001

ऑनलाइन टिकट www.bookmyshow.com पर उपलब्ध है
टिकट उपलब्ध होने पर, प्रदर्शन से एक घंटे पूर्व राष्ट्रीय नाटय विद्यालय के काउंटर से प्राप्त कर सकते है |

कृपया प्रदर्शन के 10 मिनट पूर्व अपना आसन ग्रहण कर लें |
8 वर्ष से छोटे बच्चों का प्रवेश एवं कैमरा और मोबाइल फोन वर्जित है | कृपया कोविड-19 के दिशा-निर्देशों का पालन करें।
पूछताछ 23031105, 23031106. : Web:www.nsd.gov.in

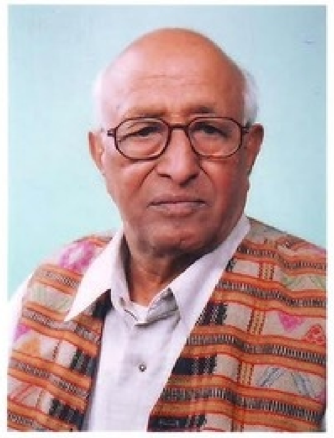

विजयदान देथा
कहानीकार

विजयदान देथा (1 सितम्बर 1926 – 10 नवम्बर 2013) जिन्हें बिज्जी के नाम से भी जाना था राजस्थान के विख्यात लेखक और पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित व्यक्ति थे। उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार और साहित्य चुड़ामणी पुरस्कार जैसे विभिन्न अन्य पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका था। 10 नवम्बर, 2013 को 87 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। विजयदान का जन्म बोरुंदा–जोधपुर गाँव में 1 सितंबर, 1926 को हुआ। वे देथा गोत्र के चारण थे। उनके पिता सबलदान देथा और दादा जुगतिदान देथा भी राजस्थान के जाने–माने कवियों में से थे। देथा ने अपने पिता और दो भाइयों को एक पुश्तैनी दुश्मनी में मात्र चार वर्ष की आयु में खो दिया। अपनी मातृ भाषा राजस्थानी के समादर के लिए 'बिज्जी' ने कभी अन्य किसी भाषा में नहीं लिखा । उनका अधिकतर कार्य उनके एक पुत्र कैलाश कबीर द्वारा हिन्दी में अनुवादित गया।

नाटक के बारे में

विजयदान देथा लिखित कहानी '' दुविधा '' (माई री मैं का से कहूँ) स्त्री की इच्छा और उसकी भावनाओं तथा सामाजिक मर्यादा के बीच द्वंद्व की कथा है । आज के इस प्रगतिशील समाज के सामने, जो की स्त्रीयों को पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलकर चलने और सामान अधिकार प्रदान करने की बात करता है, की एक सबसे बड़ी विषमता या विडम्बना, को लेखक के शब्दों में कुछ यूँ सामने रखता है – '' लुगाई की अपनी मर्जी होती ही कहाँ है , मसान ना पहुंचे तब तक मेढ़ी और मेढ़ी से सीधी मसान विज्ञान और बुद्धि के उत्कर्ष पर पहुँचने का दावा करने वाले इस समाज में स्त्री आज भी अपनी मानसिक और शारीरिक अधिकारों के इस्तेमाल के लिए स्वतन्त्र नहीं है – बल्कि उसे अपनी हर इच्छा – अनिच्छा को पुरुष प्रधान विचारों से तोलना पड़ता है ? स्त्री का समूचा व्यक्तित्व, समूचा अस्तित्व कब से दो हिस्सों बंटा हुआ है –– जन्म से लेकर विवाह तक उसके सारे अधिकार उसके माँ – बाप के पास होते हैं और विवाह के बाद पति और बच्चों के पास स्त्री की भावनाएँ , उसकी इच्छाएँ , उसकी सारी स्वतंत्रता। उसकी सारी संभावनाएँ समाज की बनायी दो मर्यादित चौखटों तक आज भी सीमित है । स्त्री के अस्तित्व का सारा आकाश आज भी फैला है सिर्फ और सिर्फ '' मेढ़ी से मसान तक '' स्त्रियों की इस सामाजिक अवस्था पर एक बहुत ही प्रगतिशील कहानी है " दुविधा " ।

अजय कुमार

निर्देशक

अजय कुमार वर्तमान में दिल्ली में रहने वाले एक कलाकार हैं। उन्होंने अपने अभिनय के साथ–साथ गायन कौशल के लिए भी सम्मान अर्जित किया है। उन्होंने रंगमंच में दीक्षा 1989 में निर्माण कला मंच, पटना से शुरू की। बाद में वे रंग विदूषक, भोपाल से भी जुड़ गए। पटना विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद अजय कुमार ने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली में चयनित हुए जहां उन्होंने अभिनय में विशेषज्ञता के साथ वर्ष 2000 में अपना पाठ्यक्रम पूरा किया। अजय कुमार ने बी.वी. कारंत, बंसी कौल, राम गोपाल बजाज, अनुराधा कपूर, रॉबिन दास, त्रिपुरारी शर्मा, नसीरुद्दीन शाह, भास्कर चंदावरकर, संजय उपाध्याय, रॉयस्टेन एबेल, जॉन रसेल ब्राउन और सिसली बेरी के साथ काम किया है।

इन प्रतिष्ठित हस्तियों के साथ काम करने के उनके अनुभव ने उन्हें एक बहुमुखी अभिनेता, निर्देशक, संगीतकार और एक लेखक के रूप में विकसित होने में मदद की। अजय कुमार ने 50 से अधिक नाटकों, कविताओं, कहानियों और जीवनियों का नाटकीय प्रतिनिधित्व किया है। उनके कुछ सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में टिम सपल द्वारा निर्देशित शेक्सपियर की 'ए मिडसमर नाइट्स ड्रीम' शामिल है। यह ब्रिटिश काउंसिल और रॉयल शेक्सपियर कंपनी, स्ट्रैटफोर्ड–ऑन–एवन, इंग्लैंड के साथ एक सहयोगात्मक कार्य था। उन्होंने डैश आर्ट ग्रुप, यूके; एक्ट प्रोडक्शन, यूके; सीएपीए, यूएसए के साथ भी काम किया है और अपने प्रदर्शन के लिए पूरी दुनिया की यात्रा की है। वह एनएसडी के साथ थिएटर संगीत के विजिटिंग फैकल्टी के रूप में भी जुड़े रहे हैं। बतौर संगीत निर्देशक 50 से अधिक नाटकों से जुड़े रहे हैं। अजय कुमार ने कथा–गायन–वचन के कथात्मक कला रूप पर काम करते हुए कुशलता से खुद के लिए एक जगह बनाने का काम किया है, जहां एक गायक–अभिनेता कई पात्रों का प्रदर्शन करता है। इस रूप में उन्होंने दो प्रमुख रचनाएँ बनाई हैं – बड़ा भांड से बड़ा भांड, और माई री मैं का से कहूँ। उनके योगदान के लिए कई संस्थाओं ने उन्हें सम्मानित किया है। रंगमंच संगीत के क्षेत्र में उनकी उल्लेखनीय प्रतिभा के लिए उन्हें वर्ष 2008 के लिए संगीत नाटक अकादेमी द्वारा 'उस्ताद बिस्मिल्लाह खान युवा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

निर्देशकीय

वैश्विक संकट के इस दौर में , हम रंगकर्म कर पा रहे हैं तो यह किसी चमत्कार से कम नहीं है । वापस दर्शकों का प्रेक्षागृह में लौटना हम कलाकारों के लिए आनंद और उत्साह का विषय है, सभी कलाकारों की तरफ से मैं सिर्फ एक ही बात कहना चाहूँगा जो की श्रीकांत वर्मा जी कि इस कविता में अन्तर्निहित है : –

गुण गाहक गुण सागर गुण निधान
गुण गाहक गुण सागर गुण निधान
बहुत वर्षों बाद मैं आपके दरवाजे आया हूँ,
सुनिए जजमान
जन्म जन्मान्तरों की कथाएँ,
नगरों नागरिकों की व्यथाएँ, लाया हूँ
पहचाना मुझे बेताल,
मुझे मेरे कृत्यों ने काल की रुग्ण एक डाल पर
लटका दिया था
आपकी दया से मैंने नर योनी फिर धारण की
अब एक और मुझे वर दे,
अगर मैं आपको स्वर ना दे सकूँ ,

राजेश सिंह

संकल्पना एवं मार्गदर्शन

बिहार विश्वविद्यालय से स्नातक, राजेश सिंह ने रंगकर्म में शुरुआती प्रशिक्षण श्रीराम सेन्टर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स, नयी दिल्ली से प्राप्त किया। बाद में, आपने साहित्य कला परिषद रंगमण्डल व श्रीराम सेन्टर रंगमण्डल में एक कलाकार के रूप में काम किया। तत्पश्चात आपने 2006 में रंग तकनीक व परिकल्पना में विशेषज्ञता के साथ राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से स्नातक उपाधि प्राप्त की और गंधर्व महाविद्यालय से आपने संगीत में प्रशिक्षण प्राप्त किया। इन्लैक्स छात्रवृत्ति के तहत आपने 2008–09 में लन्दन एकेडमी ऑफ म्यूजिक एण्ड ड्रामेटिक आर्ट्स, यूनाइटेड किंगडम से रंग परिकल्पना, निर्देशन व मंच प्रबन्धन का अध्ययन किया।

ब.व. कारन्त, के.एन. पणिक्कर, राम गोपाल बजाज, देवेन्द्रराज अंकुर, मोहन महर्षि व अन्य प्रख्यात रंग हस्तियों के साथ काम करते हुए आपने परिकल्पना व निर्देशन की अपनी विशेष शैली विकसित की। आपके प्रशंसित निर्देशकीय कार्यों में 'रास', 'मेटामोर्फ़ोसिस', 'रामलीला', 'जाँच पड़ताल', 'राग दरबारी', 'अपना अपना सवाल', 'पोस्टर', 'एक ज़ोरदार लड़की की कहानी', 'एक कलम सड़क किनारे', 'ब्लैकबोर्ड लैण्ड', 'हाउ टू डिसेपियर कम्पलीटली एण्ड नेवर बी फाउण्ड', 'आदमी और तंत्र', 'कबाब', 'बाबूजी', 'व्यक्तिगत' आदि शामिल हैं। साहित्य कला परिषद, दिल्ली सरकार ने आपके दो नाटकों को सर्वश्रेष्ठ नाटक के तौर पर चुना और आपको सर्वश्रेष्ठ निर्देशक के पुरस्कार से सम्मानित किया है। 2009 में राम गोपाल बजाज द्वारा निर्देशित नाटक 'लैला मजनूँ' की ध्वनि परिकल्पना के लिए आपको महिन्द्रा पुरस्कार दिया गया। राजेश को वर्ष 2017 में दृश्य परिकल्पना के लिए केन्द्रीय संगीत नाटक अकादेमी के 'बिस्मिल्लाह ख़ान युवा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। वर्तमान में आप राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय रंगमण्डल के प्रमुख हैं।

मंच पर

सूत्रधार	:	शिल्पा भारती, मधुरिमा तरफदार, सत्येन्द्र मलिक, अंकुर सिंह
भूत	:	मज़िबुर रहमान /सौरभ गुरुदास मेश्रम
दुल्हन	:	डॉ. अनामिका सागर, पूजा गुप्ता, पोतशंगबम रीता देवी / शिवानी भारतीय, सुगंध पाण्डेय, माधवी शर्मा
दूल्हा	:	विकास कुमार गुप्ता, विक्रम लेप्चा, बिपिन देवीदासराव घोबाले /आशुतोष बेनर्जी, अश्विन वर्मा, सुमन कुमार
सेठ	:	विक्रम लेप्चा / अश्विन कुमार
सेठानी	:	अदिति आर्या / माधवी शर्मा
गड़रिया	:	बिपिन देवीदासराव घोबाले / सुमन कुमार
कोरस	:	अनंत शर्मा, धीरज कुमार, भावांजलि, हीरालाल राय, डॉ. अनामिका सागर, पूजा गुप्ता, पोतशंगबम रीता देवी, शिवानी भारतीय, सुगंध पाण्डेय, माधवी शर्मा, विकास कुमार गुप्ता, विक्रम लेप्चा, बिपिन देवीदासराव घोबाले, आशुतोष बेनर्जी, अश्विन वर्मा, सुमन कुमार, मज़िबुर रहमान, सौरभ गुरुदास मेश्रम, सुशील कान्त मिश्रा ।

मंच परे

रंगमंडल प्रमुख	:	राजेश सिंह
मंच परिकल्पना	:	सुशील कान्त मिश्रा
मंच सज्जा सहायक	:	अनंत शर्मा
मंच निर्माण	:	विक्रम, तक्मीर
प्रकाश परिकल्पना एवं संचालन	:	सुशील कान्त मिश्रा, सुनील
प्रकाश निष्पादन	:	मो. सुलेमान, प्रदीप अग्रवाल
वेशभूषा प्रभारी	:	पार्वती बिष्ट
वेशभूषा परिकल्पना	:	पूजा गुप्ता
वेशभूषा सहायक	:	अदिति आर्या, मधुरिमा तरफदार
मंच सामग्री	:	मोतीलाल खरे
सहायक	:	धीरज कुमार , भावांजलि सक्सेना
हारमोनियम	:	राजेश पाठक
सारंगी	:	अनिल मिश्रा
तालवाद्य	:	शैलेन्द्र चौहान
सितार	:	श्याम रस्तोगी
संगीत संयोजन एवं सहायक	:	नवीन सिंह ठाकुर
ध्वनि संचालन	:	मुकेश कुमार
पोस्टर व ब्रोशर मार्गदर्शन	:	मज़िबुर रहमान
पोस्टर व ब्रोशर परिकल्पना	:	अली रज़ा
मेकअप	:	बिपीन देविदासराव, डॉ. अनामिका सागर
प्रशासन व लेखा	:	आदित्य वर्मा, जुबैर बेदी
प्रशासन सहायक	:	पवन कुमार, धनराज
फोटोग्राफी	:	दीपक कुमार
कहानी	:	विजयदान देथा
संकल्पना एवं मार्गदर्शन	:	राजेश सिंह
संगीत एवं निर्देशन	:	अजय कुमार

राष्ट्रीय नाटय विद्यालय, रंगमंडल

श्री ईब्राहिम अल्काज़ी ने एक प्रयोग के मद्देनजर वर्ष 1964 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के रंगमंडल की स्थापना की। शुरू में इसमें सिर्फ चार अभिनेता थे। बाद में ऐसे अनेक अभिनेताओं, संगीतकारों और तकनीशियनों को लेकर इस रंगमंडल का विस्तार हुआ, जो मुख्यतः राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के स्नातक थे। रंगमंडल, वर्षों से विविध प्रकार की नाट्य–प्रस्तुतियों का मंचन करता रहा है, जिनमें शैलीबद्ध संगीतधर्मी नाटकों के साथ–साथ यथार्थवादी समसामयिक नाटक भी शामिल हैं। इनके साथ–साथ रंगमंडल ने विदेशी भाषाओं के नाटकों के अनुवाद और नाट्य रूपांतरण भी प्रस्तुत किए। रंगमंडल के साथ राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ख़्यातिप्राप्त रंग–निर्देशकों ने काम किया है। रंगमंडल ने 98 नाटककारों के लगभग 161 से भी अधिक नाटक प्रस्तुत किए हैं और अब तक लगभग 76 रंग–निर्देशकों ने रंगमंडल के साथ कार्य किया है। रंगमंडल से सम्बद्ध अनेक अभिनेताओं ने थिएटर, सिनेमा और टेलीविज़न के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम किया है। रंगमंडल ने पूरे भारतवर्ष के व्यापक दौरे किए हैं तथा देश से बाहर जर्मनी, पोलैंड, ब्रिटेन, नेपाल, मॉरिशस, बांग्लादेश एवं चीन में सफल प्रस्तुतियां दी हैं। 1993 में मोहन राकेश की 20वीं पुण्यतिथि पर उनके नाटकों का महत्वपूर्ण उत्सव आयोजित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। रंगमंडल की रजत जयंती के अवसर पर वर्ष 1991 में रंगमंडल की प्रस्तुतियों से संबंधित छायाचित्र, मंच–विन्यास, वेशभूषा, मंच–सामग्री, पोस्टर आदि को शामिल करते हुए 'रंगयात्रा' नामक एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। सन् 2013 में रंगमंडल अपने स्वर्ण जयंती वर्ष में प्रवेश कर चुका है और लगातार नए कार्यों को सृजन करते हुए अनेक स्थानों पर नाटकों का प्रदर्शन करता रहता है।

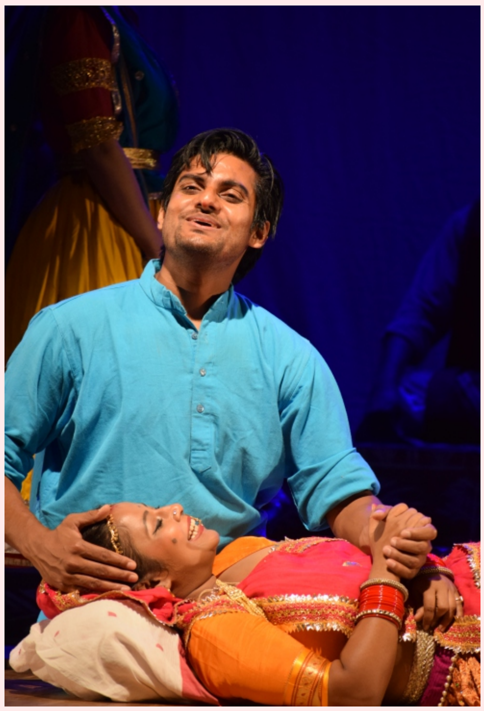

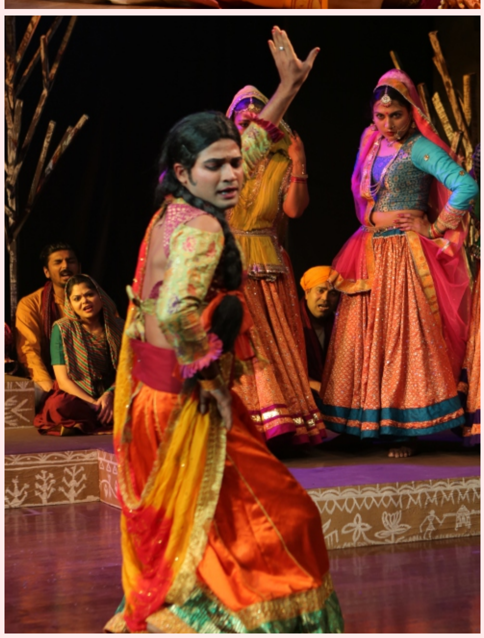

NSD REPERTORY COMPANY ARTISTS 2022-23

Ajay Kumar

Pooja Gupta

Anamika Sagar

Potshangbam Rita Devi

Susheel Kant Mishra

Mazibur Rehman

Bipin Ghobale

Bikram Lepcha

Aditi Arya

Shilpa Bharti

Sugandha Pandey

Vikash Gupta

Ashwin Verma

Madhurima Tarafder

Shivani Bhartiya

Anant Sharma

Hira Lal Roy

Ankur Singh

Ashutosh Banerjee

Saurabh Meshram

Satyender Malik

Suman Kumar

Dheeraj Kumar

Bhavanjali Saxena

Madhavi Sharma

NSD REPERTORY COMPANY

Technical & Administration Staff

Vikram Kumar

Mukesh Kumar

Mohd. Suleman

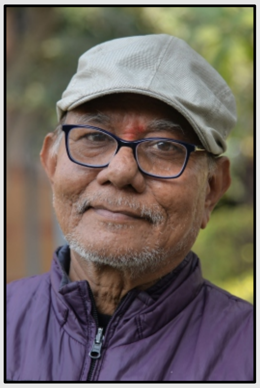
Moti Lal Khare

Parwati Bisht

Naveen Singh

Zubair Bedi

Aditya Verma

Sunil

Taqmeer

Dhanraj

Pawan Kumar

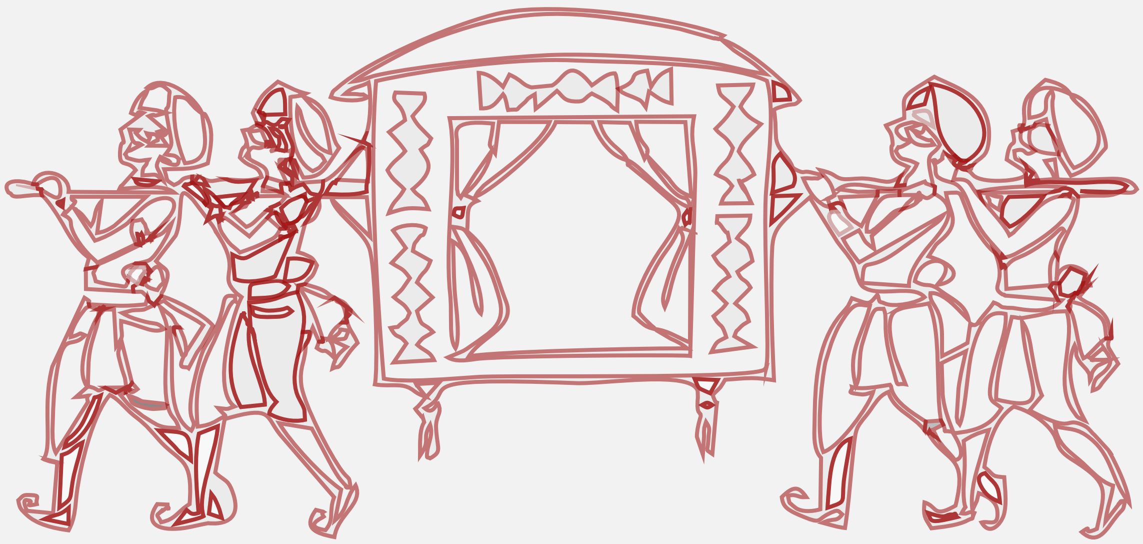

National School of Drama Repertory Company

Bahawalpur House, Bhagwandas Road, New Delhi - 110001
Ph: 011- 23031105, 23031106 Web:www.nsd.gov.in
Email : nsdrepertory@yahoo.co.in

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, रंगमंडल

बहावलपुर हाउस, भगवानदास रोड, नई दिल्ली – 110001
दूरभाष : 011- 23031105, 23031106 वेबसाइट : www.nsd.gov.in
Email : nsdrepertory@yahoo.co.in